Research Guru
Online Journal of Multidisciplinary Subjects (ISSN : 2349-266X)
UGC Approved Journal No. 63726
Impact Factor:3.021 website: www.researchguru.net
Volume-11,Issue-3,December-2017

सिकंदर - पोरस युध्ध :भारतीय इतिहास मे कितना निर्णायक ?

डॉ.दिव्या ए. पटेल अध्यापक सहायक,डिफ़ेन्स स्टडीज (इतिहास)
आर्टस कॉलेज, वडाली जी- साबरकांठा

सार :

यह प्रसिध्ध युद्ध यूनान के प्रसिध्ध सेनानायक सिकंदर महान तथा भारतीय सेनानायक पोरस के मध्य ३२६ ई.पू. झेलम नदी के निकट लड़ा गया। बचपन से ही युद्ध-प्रेमी तथा विश्व-विजय बनने की प्रबल इच्छा रखनेवाला सिकंदर अपने अभिमान के लिए निकला तो उसे फ्रांस,अफगान,तुर्की आदि देशो को पराजित करने मे सफलता मिली। इसी क्रम मे वह भारत की सीमा मे भी प्रवेश कर दिया।

सर्वप्रथम सिकंदर ने तक्षशिला के शासक आंभी को युद्ध किए बिना ही आत्मसमर्पण करने के लिए मजबूर किया; जिसमे उसे न केवल सफलता मिली, बल्कि आगे युद्ध करने के लिए सहयोग भी प्राप्त हुआ। राजा आंभी ने पोरस से बदला लेने के लिए सिकंदर की हर संभव सहायता भी की। इसका लाभ उठाते हुए सिकंदर ने पोरस को भी आत्मसमर्पण के लिए बाध्य किया; परंतु उसकी रगो मे राष्ट्र-प्रेम एवं बलिदान की भावना बह रही थी, अत: उसने सिकंदर के आत्मसमर्पण के प्रस्ताव को ठुकराते हुए कहा, “मे सीमा पर अवश्य आऊँगा; परंतु शत्रु का मुक़ाबला करने हेतु,न कि उससे भेट अथवा आत्मसमर्पण करने हेतु।"

इस प्रकार दोनों सेनानायकों के मध्य युद्ध की तैयारी शुरू हो गई। नदी के कारण कुछ समय तक सिकंदर को युद्ध का इंतजार करना पड़ा; क्योंकि वह आकस्मिक आक्रमण द्वारा शत्रु को विस्मय मे डालकर सफलता प्राप्त करना चाहता था। अंतत: सिकंदर इसी नीति (धोखे) के आधार पर ईस युद्ध मे निर्णायक सफलता प्राप्त कर सका। [१]

सिकंदर के आक्रमण पूर्व भारत की स्थिति :

सिकंदर के आक्रमण के पूर्व भारत की अवस्था बड़ी शोचनीय थी। यह संग्राम उस समय हुआ जब सम्पूर्ण उत्तरी भारत महाभारत युद्ध के बाद अनेक छोटे-छोटे राज्यो मे विभक्त हो चुका था। इनमे से कुछ मे राजतन्त्रात्मक शासन व्यवस्था एवं कुछ मे गणतंत्रात्मक शासन व्यवस्था विधमान थी। धनधान्य की द्रष्टि से सभी राज्य समृद्ध थे, परंतु आपसी ईर्ष्या द्रेष के शिकार थे। उनमे आपस मे संघर्ष चलता रहता था। यहा पर कोई एसी राजनीतिक शक्ति नही थी, जो बिखरे राज्यो के सूत्र मे पिरोकर विदेशी आक्रमण का सामना कर सके। इसके विपरीत उनमे आपसी शत्रुता इतनी तीव्र थी की वे एक दूसरे का विनाश देखने के लिए सदैव उधत रहते थे। एसी स्थिति मे वे मिलजुल कर विदेशी आक्रमण का सामना न कर सके। परिणाम स्वरूप बड़ी सरलता के साथ वे विदेशी आक्रमणकारी के हाथों पराजित हो गये। कुछ विद्वानों की यह भी मान्यता हे कि कुछ देशद्रोही व्यक्तियो तथा राजाओ ने सिकंदर को भारत पर आक्रमण करने के लिए भी निमंत्रण दिया। एसी दशा मे सिकंदर का काम और भी आसान हो गया एवं उसे पूरी सफलता भी मिली। [२]

सिकंदर का जीवन परिचय :

सिकंदर यूनान देश के एक राज्य मकदूनिया के शासक फिलिप का पुत्र था। उसका जन्म ३५४ ई.पू. मे हुआ था। उसने यूनान के दार्शनिक अरस्तू से शिक्षा प्राप्त की थी। सिकंदर बचपन से ही महत्वाकांक्षी था और विश्व विजय का स्वप्न देखता था। फिलिप की मृत्यु पर वह ३३६ ई.पू. मे मकदूनिया का शासक बना। शासक बनते ही उसने अपने स्वप्न को साकार करने हेतु विजय यात्रा आरंभ कर दी। पहले उसने यूनान के अन्य नगर राज्यों को जीता। फिर उसने मिश्र पर अधिकार किया। इसके पश्चात पश्चिमी एशिया को अपनी साम्राज्यवादी क्षुधा का ग्रास बनाया। ईरान की आंतरिक निर्बलता से वह भली प्रकार परिचित था। अत: उसने ३३० ई.पू. मे ईरानी शासक द्रारा तृतीय को युद्ध मे पराजित किया और उसके साम्राज्य पर अधिकार कर लिया। इसके उपरांत उसने भारत विजय करने की योजना बनाई। [३]

पोरस का जीवन परिचय :

पोरस प्राचीन भारत के एक राजा थे जिनका राज्य झेलम नदी से लेकर चिनाब नदी तक फैला हुआ था। राजा पोरस का समय ३४० ई.पू. से

३१५ ई.पू. तक का माना जाता है। राजा पोरस इसलिए प्रसिद्ध है क्योंकि इन्होने सिकंदर से एक युद्ध लड़ा था जो कि इतिहास मे काफ़ी प्रसिद्ध है। ईस युद्ध मे सिकंदर को पोरस से कड़ी टक्कर मिली थी, जिसके बाद उसके सैनिकों के हौसले टूट गए और उन्होने पूरे भारत को जीतने का सपना छोड़ दिया।

पोरस को भारतीय इतिहासकार पुरू भी कहते है। यह भी माना जाता है प्राचीन संस्कृत ग्रंथ मुद्राराक्षस मे वर्णित राजा पर्वतक कोई और नहीं बल्की पोरस ही है।

झेलम और चिनाब के मध्यवर्ती प्रदेश पर पोरस अथवा पुरू का राज्य था। इसमे आधुनिक गुजरात और शाहपुर (पंजाब) के जिले सम्मिलित थे। सिकंदर के समय भारत का यह शक्तिशाली राज्य था। तक्षशिला का शासक आंभि पुरू से ईर्ष्या करता था। इसलिए आंभि ने पुरू को नीचा दिखाने अथवा उसका मान मर्दन करने के लिए एक राजदूत द्वारा सिकंदर को भारत पर आक्रमण करने का निमंत्रण दिया था और उसे पोरस के विरुध्ध सहायता देने का आश्वासन भी दिया था। डॉ. आर.के. मुकर्जी ने लीखा है की, “यह पहला अवसर था,जबकि किसी भारतीय शासक ने देशद्रोही होने का परिचय दिया था।”

सिकंदर और पोरस की सैन्य शक्ति :

सिकंदर और पोरस की सैन्य शक्ति के संदर्भ मे विद्वानो मे मतभेद है,परंतु इतना निश्चित है की सिकंदर की तुलना मे पोरस की सेना की शक्ति कम थी | सर डबल्यू टार्न के अनुसार पोरस की सेना मे ४००० अश्वारोही, ३०० रथ,२०० हाथी और ३०,००० पैदल सैनिक थे |[४] डॉ रमाशंकर त्रिपाठी ने अपनी पुस्तक (प्राचीन भारत का इतिहास) मे उल्लेख किया है कि पोरस के पास ५०,००० पैदल, ३००० घुड़सवार, १००० रथ और १३० गज सेना लेकर बढ़ा | अश्व सेना और पैदल सेना के सैनिको युद्ध करने के लिए हथियार ,धनुषबाण एव भाला से सुसज्जित थे | जिसमे धनुष्यबाण वजन मे भारी होने के कारण जमीन पर टिकाकर तीर चलाया जाता था |

सिकंदर की सैन्य शक्ति लगभग ३०,००० सैनिको की थी |[५] जिसमे १५,००० पैदल सैनिको और बाकी के अश्व सैनिको थे | पैदल सैनिको

कवच युक्त तथा २१ फीट लंबा भाला रखते थे, इसके साथ ये सैनिको तलवार व ठाल का भी प्रयोग करते थे | सिकंदर महान की सेना मे युद्ध-तंत्र की भी व्यवस्था थी जो काफी दूर से शत्रु पर आक्रमण कर सकती थी |

पोरस की सेना का संगठन " चतुरंग बल "(पैदल,अश्वारोही,रथ और गज) पर हुआ था जिसमे रथों का विशेष महत्व था | और सिकंदर की सेना " फैलेंक्स पध्धति "(पंक्ति बध्ध पैदल सेना की ठोस रचना फैलेंक्स कहलाती थी) पर संगठित थी ,जो उसे अपने पिता फिलिप से विरासत मे प्राप्त हुई थी |जिसमे पैदल सेना की संख्या अधिक थी |

सिकंदर महान द्वारा झेलम नदी पार करना :

जब सिकंदर झेलम नदी के पश्चिमी तट पर आ पहुचा तब उसने पोरस को नदी के पूर्वी तट पर विशाल सेना के साथ उसका इंतजार करता था | क्योकि तक्षशिला से सिकंदर ने उसे संदेश भेजा था की वह आत्म - समर्पण कर उससे भेट करे | पोरस इसके उत्तर मे तैयार खड़ा था,परंतु युद्ध के लिए आत्म - समर्पण के लिए नही | इन दोनों विराट सेनाओ के मध्य झेलम बड़ी ही तीव्र गति से बह रही थी | सिकंदर ने नदी के तेज प्रवाह और पोरस की सेना को खड़ा देखकर तुरन्त नदी पार करना उचित न समजा | लेकिन दूसरी तरफ सिकंदर के सामने बहुत बड़ी समस्या यह थी की यदी वर्षा प्रारम्भ हो गई तो झेलम को पार करना बिलकुल असंभव ही हो जायेगा | काफी सोच विचार के बाद उसने अपना शिविर डाल दिया और पोरस को धोखा देने के लिए बाह्य रूप से एसा नाटक प्रस्तुत किया मानो यह शिविर बहुत दिनो तक पड़ा रहेगा | इसके साथ ही झेलम नदी को पार करने के लिए उचित स्थान की खोज करता रहा | [६] आखिरकार सिकंदर को लगभग १६ मील दूर एक एसे स्थान की खोज की जहा पर नदी छिछली हो गई थी | सबसे बड़ी बात यह थी की इस स्थान के बारे मे पोरस को जानकारी नही थी |

(एरियन के शब्दो मे आक्रामक ने "मार्गचुराना" निश्चित किया |) सिकंदरने अपने ११०० चुने हुए सैनिको के साथ नदी के चढ़ाव की ओर बढ़ा और वहा रात के अन्धेरे मे मूसलधार वर्षा मे टूटे हुये स्थान पर चुपके से झेलम नदी को पार कर लिया | पार उतरने से पहले उसने अपने इरादे को

गुप्त रखने के लिए एक और युक्ति से काम लिया था | अपने सेनापति क्रेटरस की अधीनता मे उसने एक बड़ी सेना छोड़कर उसे नाच गान करने का निर्देश दे दिया था जिससे पोरस को विश्वास बना रहे की आक्रमण वर्षा मे नही होगा |[७]

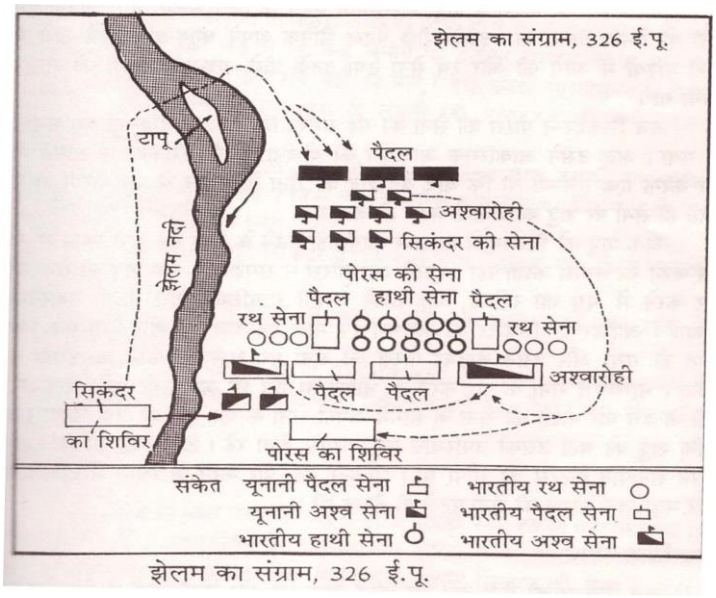

झेलम का संग्राम, 326 ई.पू.

प्रारम्भिक युध्ध :

झेलम नदी पार करके सिकंदर घुड़सवार सैनिको को साथ रखकर नदी के तट पर आगे बढ़ने लगा | नदी मे आगे बढ़ते समय सिकंदरने एक भारतीय टुकड़ी को निरीक्षण करते हुए देखा और उस टुकड़ी का सेनापति पोरस का पूत्र था | उसके पास करीब १,००० सैनिक थे | पोरस का पूत्र रक्षणात्मक कार्यवाही करे उससे पहेले सिकंदर ने आक्रमण करके उसे खत्म कर दीया | उसके साथ ४०० सैनिक भी खत्म हो गये ,बाकी सैनिको ने राजकुमार के मृत्यु का संदेशा पोरस को दीया | इसलिए पोरस ने अपने कुछ सैनिको को पड़ाव की जगह पर छोड़ कर, बाकी सैनिको को उचित क्रम मे रखकर हिड़ास्पस के मेदान मे सिकंदर का इंतजार करने लगा |

युध्ध की शरूआत :

पोरस ने अपने सैन्य मे सबसे आगे गज सेना और रथ सेना को रखा था | सिकंदर यह योजना देखकर आश्चर्य चकित हुआ था, क्योकि वो गज सेना की साहस और शक्ति को पहचानता नही था | जंगली जानवर और शक्तिशाली राजा का सामना करने के लिए आगे से हुमला करने की जगह बाजू की ओर से आक्रमण करने के लिए आदेश दिये | सिकंदर ने पूर्व योजना के अनुसार पोरस की सेना पर तीव्र गति से आक्रमण किया । परिणाम स्वरूप पोरस की दाये की ओर का अश्व सैन्य बाये की ओर मदद करने के लिए पहुचा | सिकंदर ने मौका देखकर अपने अश्व सैन्य को पोरस की सेना के पीछे के भाग से आक्रमण के आदेश दिये | यह अश्व दल धीरे-धीरे पोरस के अश्व सेना को खत्म करने लगा | पोरस के रथ वजन और कद मे ज्यादा होने से और ज्यादा बारीश की वजह से कीचड़ मे फस गए | इस तरह पोरस की सबसे आधारभूत सेना असफल हो गई | सिकंदर के पैदल सैनिको ने शत्रु सेना के हाथी की आंखे, महावत, हाथी की सूंढ इत्यादि को निशाना बनाकर आक्रमण की शरूआत की | सिकंदर के प्रबल आक्रमण से पोरस के हाथी अपने ही सैनिको को रौदते हुये पीछे हटने लगे, जिसके कारण पैदल सैनिक अपनी वीरता का प्रदर्शन नही कर पाये और खुदकों बचाने के लिए युध्ध मैदान छोडकर भागने लगे | सैन्य मे हुई अव्यवस्था के कारण पोरस सिकंदर का सामना करने के लिए असमर्थ हो गया |

युध्ध के अंतिम पड़ाव मे अगली योजना के अनुसार क्रेटरस सेनापती की सेना ने पीछे के भाग से आक्रमण किया | बुरी तरह से घायल हुये पोरस ने सिकंदर का सामना किया, किन्तु आखिरकार पोरस को बन्दी बनाकर सिकंदर के समक्ष प्रस्तुत किया गया | फिर भी उसका उत्साह तनिक भी भंग नही हुआ | सिकंदर और पोरस के बीच इस समय जो वार्तालाप हुआ, वह अत्यंत रोचक है | सिकंदर ने पोरस की शूरवीरता की सराहना करते हुए उससे पूछा, “तुम्हारे साथ कैसा व्यवहार किया जाए ?” इस पर पोरस ने बड़ी वीरता तथा निर्भीकता से उतर दिया - “ जैसा एक राजा दूसरे राजा के साथ करता है |” पोरस के उतर से सिकंदर बहुत प्रभावित हुआ और उसने न केवल उसका राज्य ही वापिस लौटा दिया, अपितु उसको सिंध एवं झेलम के अन्य विजित राज्यो को सोपकर उसे अपना मित्र बना लिया |

सिकंदर के आक्रमण के प्रभाव :

सिकंदर के आक्रमण के प्रभाव के सम्बन्ध मे इतिहासकारो मे काफी मतभेद है | कुछ विध्वानों का यह मानना है कि सिकंदर का आक्रमण एक आंधी के समान था, जो आया और चला गया | अत: उसके आक्रमण का भारत पर कोई स्थायी प्रभाव नही पड़ा | कुछ अन्य इतिहासकारो ने उसके आक्रमण की तुलना पानी के बुलबुले से ही है, जो गिरते ही बिखर जाता है | डॉ.वी.ए.स्मिथ भी इसी मत के समर्थक है | उनके अनुसार, " सिकंदर के अभियान का भारतीय संस्थाओ तथा विचारधारा पर कोई प्रत्यक्ष प्रभाव नही पड़ा | भारतीय कला, धर्म, तथा समाज मे किसी प्रकार का परिवर्तन न हुआ | यहा तक कि भारतीयो ने युध्ध कौशल के बारे मे भी यूनानियों से सीखने मे रुचि न ली | उन्होने अपनी प्राचीन युध्ध प्रणाली को अपनाये रखा, जो रथो, हाथियो तथा निम्न कोटि के पैदल सैनिको पर आधारित थी |[८]

क्या वर्तमान सरहदे सुरक्षित है ?

सिकंदर - पोरस युध्ध प्राचीन भारतीय इतिहास में काफी प्रभावक व् निर्णायक रहा | विदेशीयों के भारत पे आक्रमण आज भी चल रहे है | सिकंदर - पोरस युध्ध जैसे विदेशी युध्धो से आधुनिक युग में हुए भारत - पाकिस्तान युध्ध और भारत - चीन युध्ध आधुनिक युग में निर्णायक साबित हुए है | हालांकि भारतीय सेना ने अपने मजबूत सैन्य से आज भी देश की सरहदों की सुरक्षा करने में अपनी पूरी जान लगा रखी है | वर्तमान सरहदों के प्रश्न दिन व दिन बढ़ते रहते है | वर्तमान सरहदों की रक्षा के मामले में सिकंदर - पोरस प्रेरणारूप बना रहेगा |

पादटीप :

1. मिश्र , सुरेन्द्रकुमार , “संसार के प्रसिध्ध युध्ध " ग्रंथ अकादमी , नई दिल्ली, पृ.३१

2. नागोरी, एस.एल. और नागोरी जीतेश , “विश्व के ऐतिहासिक युध्ध ”इना श्री पब्लिशर्स , जयपुर , १९९७ ,पृ. ७७-७८.

3. सिंह, लल्लन जी, “युध्ध कला ” प्रकाश बुक डिपो, बरेली, प्रथम संस्करण ,२००१ ,पृ.४.

4. ऐलेकजैन्दर दी ग्रेट, कैम्बिज ,१९५०.

5. भारतीय ऐतिहासिक त्रैमासिक पत्रिका, कलकता. दिसम्बर. १९४९.

6. डॉ. रमाशंकर त्रिपाठी, “प्राचीन भारत का इतिहास "

7. 'भून' नामक स्थान पर नदी पार किया जहा नदी की धारा दो भागों में विभक्त थी |

8. वी.ए.स्मिथ. “द इन्डो - पार्थियन दायनेस्टीज .